महाणुभावो

(महानुभाव)

मंगल आशीर्वाद :

परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती

क्षपकराज शिरोमणि आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

ग्रंथकार :

आचार्य वसुनन्दी मुनि

कृति : महाणुभावो (महानुभाव)
मंगल आशीर्वाद : प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती, श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

कृतिकार : प्राकृत भाषा चक्रवर्ती आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

सम्पादिका : आर्यिका वर्धस्व नंदनी

संस्करण : प्रथम (सन् 2025)

प्रतियाँ : 1000

ISBN : **978-93-94199-44-6**

मूल्य : 21/- (Not for Sale)

प्रकाशक : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थल : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति कार्यालय
मो. 9971548889, 8800091252

मुद्रक : मित्तल इंडस्ट्रीज़, नई दिल्ली
मो. 9312401976

Visit us @ www.acharyavasunandi.com

सम्पादकीय

अनादिनिधन भारतीय संस्कृति में धर्मात्मा, पुण्यात्मा, महात्मा, परमात्मा, माताएँ, बहनें, बालक-बालिकाएँ सबके लिए अलग-अलग सम्बोधनार्थ प्रयुक्त हैं। सम्बोधन किए जाने वाले शब्द नि:संदेह श्रोता और वक्ता दोनोंके लिए समीचीन बोध कराने में निमित्त बनते हैं। सम्बोधन वाक्य जिस प्रकारके होते हैं उससे प्रज्ञ पुरुष सम्बोधन करने वाले और सम्बोधनको सुनने वाले व्यक्तियोंके व्यक्तित्वको जानने में समर्थ होते हैं।

जिस प्रकार हवाके प्रवाहको देखकर विज्ञजन आँधी-तूफान, गर्मी-सर्दी, रिमझिम बारिश या मूसलाधार वर्षाका अनुमान लगा लेते हैं, कृषक अपने खेतों में विद्यमान अंकुर वा पादपोंको देखकर फसलका अनुमान लगा लेते हैं, विद्यार्थीकी शिक्षाको देखकर शिक्षक उसके ज्ञानका व ज्ञानप्राप्तिकी क्षमताका अनुमान लगा लेते हैं, माता-पिता वा अभिभावक छोटे बच्चों वा किशोरवयके बालकोंको देखकर उनके शुभाशुभ भविष्यका अनुमान लगा लेते हैं उसी प्रकार सम्बोधनके शब्द, शब्दोंके उच्चारणकी विधि, स्वाराघात, शब्द बोलते समय शरीरकी प्रक्रिया व चेहरेके भाव व्यक्तिके अन्तरंगको सहज ही इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जैसे पुस्तककी अनुक्रमणिका अन्तरंगकी विषय-वस्तुको।

कई बार माता-पिता, अभिभावक, सज्जन व प्रज्ञ पुरुष यह शब्द बोलते हुए सुने जा सकते हैं कि **'पूतके पाँव, पालने में नजर आते हैं'** अर्थात् बाल्यावस्थाकी प्रवृत्ति समग्र जीवनका मंगलाचरण होता है। मुहावरे रूप में भी पढ़ते हैं **''होनहार बिरवानके होत चीकने पात''**। अर्थात् जो बालक-बालिका शैशवावस्थासे ही अपने अग्रज और पूज्य पुरुषोंकी आज्ञाका पालन करते हैं वे निःसंदेह धर्म, संस्कृति, मर्यादा व कर्त्तव्यके पालक होते हैं।

सम्बोधन में अनेक प्रकारके शब्द बोले जाते हैं–शुभ भी, अशुभ भी। शुभ शब्द दो प्रकारके होते हैं–पुण्यवर्द्धक शब्दोंका प्रयोग साधु-संत, महात्मा व पुण्यात्मा पुरुष करते हैं। यथा–भव्यात्माओं, भव्य बंधुओं, मर्यादा नरोत्तम, संस्कृति रक्षक, गुणानुरागी, धर्म संवर्द्धक, धर्मानुरागी, भव्यवर पुण्डरीक, धर्मात्मा, महानुभाव, परमहितैषी आसन्नभव्य। सामान्य शब्दोंका प्रयोग सज्जन पुरुष करते हैं। यथा–भो!, अहो! इत्यादि। अशुभ सम्बोधन वाक्य श्रोता-वक्ता दोनोंको पापवर्द्धक, संक्लेशकारक, द्वन्द व कलहकारक होते हैं जबकि शुभ सम्बोधन पुण्यवर्द्धक, विशुद्धिकारक, संक्लेशहारक शान्ति व सुखद अनुभूति कराने वाले होते हैं।

सज्जन व धर्मात्माके शब्दोंको सुनकर अंतस में शांति, सुखद अनुभूति होती है जबकि दुर्जन के वचनों को सुनकर क्रोधवृद्धि, अहंकार पोषण, लोभवृत्ति, वासनाका जागरण

एवं स्वच्छन्द प्रवृत्ति जागृत होती है। दुष्टजनोंके शब्द होते ही इस प्रकारके हैं जिन्हें सुनकर लोग कहते हैं–अंगारे बरस रहे हैं या कोई पीठपर लठ मार रहा हो या हृदयविदारक कतरनी चल रही हो या कोई दिल पर तेजाब छिड़क रहा हो अथवा मनमें कील ठोक रहा हो। क्योंकि दुष्टोंके सम्बोधन वाक्य होते हैं–रे दुष्ट, पापी, नीच, कुलविनाशक, धर्मविध्वंसक, मर्यादाभंजक इत्यादि।

अतः वर्तमानकाल में धर्मात्माओं, महात्माओं वा सज्जनोंके सम्बोधन वाक्य लुप्त होते जा रहे हैं एवं जघन्य शब्दोंका प्रादुर्भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। हमारा भाव किसी व्यक्ति विशेष पर व्यंग या कटाक्ष करना नहीं है अपितु परमपूज्य आचार्य गुरुदेवकी भावांजलिको आपके मन-मस्तिष्क व हृदय-सरोज तक पहुँचानेका लघु प्रयास है।

'महानुभाव' शब्द अत्यन्त गूढ़, सरल, सरस, सहज, बोधगम्य व सार्थक है। इसका अनुमान आप जैसे सुधी पाठक ग्रन्थको पढ़कर स्वयं लगा सकते हैं।

सम्भव है वर्तमान में बढ़ते असंतुलित शब्दोंके प्रयोगको देखते हुए आचार्यश्रीके मन में इसके लेखनका विचार आया हो। वे अक्सर आचार्य कुलभद्र स्वामीकी गाथा भी सुनाते हैं–

प्रियवाक्य प्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्तवाः
तस्माद् तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता॥

प्रियवाक्य बोलनेसे सभी प्राणी संतुष्ट होते हैं इसलिए प्रिय वचन ही बोलने चाहिए, क्योंकि वचनों में क्या कृपणता।

यदि मनुष्यका अपने शब्दों पर अधिकार हो जाए तभी वह 'शब्दसाधक', 'शिष्टाचार-परिपालक' शब्दोंका उच्चारण कर अपने साधर्मीके साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। परिवार, समाज, देश, संस्थादिका नेतृत्व, राज्य-संचालन, व्यापारादि में प्रमुख स्थान प्राप्त कर सकता है। क्योंकि इन सभीमें वाणीका मुख्य स्थान है अथवा यूँ कहें कि वाक्-व्यवहार पर विश्वका व्यापार संचालित है। नीतिकार ने कहा भी है–

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चंद्रोज्ज्वला,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजा।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥

–भर्तृहरि

मनुष्य मस्तक पर रत्नावली धारण करे, उज्ज्वल-उज्ज्वल हार पहने, स्नान-उपलेपन करें, केशों में सुगन्धि सिंचन कर उनका काक-पक्षविन्यास करे, किन्तु इतना करनेसे ही उसकी शोभा नहीं हो सकती, क्योंकि ये सभी आभूषण तो क्षयिष्णु हैं। किन्तु यदि व्यक्तिके पास सुसंस्कारित वाणी है तो संसारके समस्त आभूषण उसके पास हैं।

प्रस्तुत प्राकृत ग्रन्थ 'महाणुभावो' के प्रतिपादक परम पूज्य प्राकृतभाषा चक्रवर्ती, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज हैं। जिनकी वाणी स्वयं इष्ट, मिष्ट व शिष्ट है, जिनके मीठे प्रवचन विश्वभर में विख्यात हैं, जो वशीकरण विद्या रूप वक्तृत्व कलाके धनी हैं, जिनके वाग्माधुर्यसे जिनवाणीका अमृतोपमा निर्झर प्रवाहमान रहता है, जिनका सम्बोधन जन-जनके हृदयको प्रफुल्लित कर देता है, जिनका वक्तृत्व रूपी बांध जनमानस रूप नदियोंके दिशा परिवर्तन में समर्थ है, ऐसे आचार्य भगवन् ने 'महानुभाव' शब्दके माहात्म्य, गांभीर्य व सम्बोधनके चमत्कारको इस ग्रन्थ में दर्शाया है।

नीतिकारों द्वारा कहा गया है–

''महान अनुभावो माहात्म्यमस्य इति महानुभावः।''

जिसका अनुभव महान है, जो माहात्म्यवान् है, वह महानुभाव है।

शब्दरत्नावली में महानुभावके पर्यायवाची नाम इस प्रकार प्रतिपादित हैं–

सुकृती पुण्यवान् धन्यो धर्मी च धर्मवानपि।

महाशयो महेच्छः स्यान् महानुभाव इत्यपि॥

सुकृती (अच्छे कार्योंको करने वाला), पुण्यवान्, धन्य, धर्मी, धर्मवान्, महाशय, महान् इच्छा वाला, ये महानुभावके पर्यायवाची नाम हैं।

परम पूज्य दादा गुरु राष्ट्र संत, सिद्धांत चक्रवर्ती, क्षपकराज शिरोमणि, श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज अपने प्रवचन में 'महानुभाव' शब्दसे ही सम्बोधित किया करते थे। और वही सम्बोधन शब्दका प्रयोग आचार्य गुरुवर श्री वसुनन्दी जी मुनिराज भी अपने प्रवचनों में करते हैं। कई दूरवर्ती लोग जो चैनल आदिके माध्यमसे गुरुवरके प्रवचन सुनते हैं और कभी प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं तो कहते है ''ये वही महानुभाव वाले आचार्यश्री हैं ना, बहुत मीठी वाणी है आचार्यश्री की।''

आचार्य गुरुवर एक गम्भीर चिन्तक, विलक्षण बुद्धिके धारक, लोकमानसके जानकार, आगम ज्ञाता हैं। कई लोग पूछते थे, कई लोगोंके मन में प्रश्न था कि 'महानुभाव' शब्दका अर्थ क्या है, इसका प्रयोग किसके लिए और क्यों होता है। आचार्य गुरुवर ने इस सबका समाधान इस 'महाणुभावो' नामक लघुकाय किन्तु अर्थ गाम्भीर्य युक्त ग्रन्थ में किया है। एक सम्बोधन शब्दको उपलक्षण मात्र मानकर यहाँ आचार्यश्री के भावको इस प्रकार ग्रहण करें, कि सदैव अच्छे सम्बोधन शब्दोंका प्रयोग करें, जो स्वपर विशुद्धि में कारण होगा। सामने वाले के लिए दिया गया अच्छा सम्बोधन बदले में आपके लिए शुभ भावनाएँ व पुण्य फल लेकर आता है।

मेरे अल्पज्ञ द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थका सम्पादन पूज्य आचार्य गुरुवरका शुभ आशीर्वाद ही समझना चाहिए। सम्पादन

कलासे अनभिज्ञ मेरे द्वारा यदि शास्त्र सम्पादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन मुझे क्षमा करें। नीर-क्षीर-विवेकी हंसवत् गुणग्राही दृष्टिसे ग्रन्थका अध्ययन करें।

ग्रन्थके मुद्रण, प्रकाशनादि में सहयोगी सभी महानुभावोंको पूज्य आचार्य गुरुदेवका शुभाशीष। आचार्य गुरूवरका उत्तम स्वास्थ्य हम सभीको वरदानके रूप में प्राप्त हो, उनकी संयम साधना, तपश्चर्या, ज्ञान इत्यादि शुक्लपक्षके चन्द्रमाके समान सदैव प्रवर्द्धमान व संवर्द्धित रहे। पुनः प्राकृतभाषा चक्रवर्ती, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य भगवन् श्री वसुनन्दी जी गुरुवरके श्रीचरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!....

–आर्यिका वर्धस्व नन्दिनी

अनुपम कृति

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी पूज्य आचार्य वसुनन्दी जी का नाम प्राकृतभाषाके संरक्षण, सम्पोषण एवं उन्नयन में प्राकृत परम्परा पोषकाचार्योंकी अग्रिम पंक्ति में गौरवपूर्ण रूपसे रेखांकित किया जाता है। आपकी प्राकृतभाषा में अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियाँ उपलब्ध हैं। आप द्वारा जो प्राकृत भाषा में कृतियाँ लिखी जा रही हैं उनका प्रमेय नवीन विद्वानों एवं श्रावकोंके लिए अत्यन्त उपयोगी है। पूज्य आचार्यश्री ने प्रस्तुत कृति 'महाणुभावो' में जो विषय प्रस्तुत किया है वह अकल्पनीय है। महानुभाव शब्दका प्रयोग आपके पूज्य गुरु राष्ट्रसंत श्वेत पिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द जी महामुनिराज अपनी महती धर्मसभा में जनताको 'महानुभाव' शब्दसे सम्बोधित करते थे और उनके पदचिह्नों पर चलते हुए पूज्य आचार्य वसुनन्दी जी महाराज भी अपनी धर्मसभा में 'महानुभाव' शब्दसे ही सम्बोधित करते हैं। यह शब्द कितने महत्त्वपूर्ण अर्थको लेकर प्रचलित है, इसका ज्ञान आचार्यश्री द्वारा लिखित ''महाणुभावो'' कृतिसे ज्ञात होता है।

महानुभाव शब्द 'महा' और 'अनुभाव' इन दो शब्दोंसे बना है, जिसका अर्थ स्पष्ट है कि जिन प्राणियोंके परिणाम अत्यन्त विशुद्ध हैं वे 'महानुभाव' हैं। यही कारण है कि पूज्य आचार्यश्री ने अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, पूज्य महानुभावोंकी सर्वप्रथम वन्दनाकी है और आपने

लिखा है कि जिसके मन में प्रतिक्षण उत्तम क्षमादि दस धर्म होते हैं वह पुरुष लोक पूज्य भावी सिद्ध महानुभाव है। जो शुद्ध भावसे युक्त सम्यग्दृष्टि, अणुव्रती व महाव्रती भावी जिनेन्द्र हैं वे महानुभाव सदैव वन्दनीय हैं। महानुभाव शब्दकी महिमा में स्पष्ट लिखा है कि भव्य जीवों में महानुभावत्व होनेसे जिनेन्द्रदेव भव्य जीवोंको ही उपदेश देते हैं, अभव्योंको कदापि नहीं देते क्योंकि वे अन्धपाषाणके समान हैं। महानुभाव शब्दकी विशेषता इस गाथासे स्पष्ट होती है–

महाणुभावा समये, आसण्णभावा णिगोदजीवा वि।
अभव्वो सुरो वि णेव, गहणीयो तेण सद्देणं॥

अर्थात् आसन्न भव्य निगोदिया जीव भी जिनशासन में महानुभाव जानने चाहिए। किन्तु अभव्य देव भी उस महानुभाव शब्दसे ग्राह्य नहीं है। एक दो आदि भवके धारक, सर्वार्थसिद्धिके वासी, अहमिन्द्र, लौकान्तिक देव, शची–इन्द्राणी, सौधर्म इन्द्र आदि सभी महानुभाव हैं।

पूज्य आचार्य श्रीकी इस लघु कृति में श्रावकोंके लिए अत्यन्त उपयोगी विषय दिया है, क्योंकि आपने पुराण–पुरुषोंके विषय में भी उल्लेख किया है जैसे जीवन्धर, धनदत्त ग्वाला, चाणक्य मुनि, चन्द्रगुप्त मौर्य, राजा श्रेणिक, सम्राट खारवेल, जटायु पक्षी, रामके सेनापति कृतान्तवक्र, श्रेष्ठी नागदत्त, श्रीकृष्ण, वसुदेव, सुवर्णखुर चोर, यमपाल चाण्डाल, चारुदत्त, विद्युत्चोर, वानर, नकुल, सिंह, शूकर, अञ्जनचोर आदि

भव्य जीवोंको रेखांकित कर भूत-भविष्य-वर्तमानके भव्य जीवोंको महानुभाव शब्दसे प्रतिष्ठित किया है। आपका प्रिय क्षेत्र बोलखेड़ाका भी आपने उल्लेख करते हुए लिखा है कि अन्तिम अनुबद्धकेवली, जिन्होंने बोलखेड़ा में तप किया एवं मथुरासे मोक्ष प्राप्त किया उन श्री जम्बूस्वामी महानुभावको मैं नमस्कार करता हूँ।

पूज्य आचार्यश्री ने ''महानुभाव'' शब्दकी विशेषता में इस लघु कृति में ऐतिहासिक महापुरुषोंकी जानकारी तो दी ही है साथ में यह भी स्पष्ट होता है कि तिर्यंच भी भावी महानुभाव हैं। पूज्य आचार्यश्रीकी तपाराधनाके साथ श्रुताराधना भी विशिष्ट स्थान रखती है। इस श्रुताराधनाके फलस्वरूप ही पूज्य आचार्यश्री अनेक नवीन प्रमेयोंसे हम सभी विद्वत् जनोंको ज्ञानार्जन करा रहें हैं। अतः इस अनुपमकार्यके प्रति विद्वत् समाज और श्रावक इस श्रुताराधनाकी अनुमोदना कर, हम सभी श्रुताराधक बनें और इस महानुभाव शब्दको सार्थक करें। इस भावनाके साथ पूज्य आचार्यश्रीके चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु।

श्रुताराधक

– प्राचार्य डॉ शीतल चंद जैन

जयपुर

महाणुभावो

(महानुभाव)

संपइयालस्स सव्व-जिणिंदा णिच्चं पंचपरमेट्ठी।
सगभयवत्तं लहिदुं, महाणुभावा परियंदामि॥1॥

वर्तमानकालके सभी जिनेन्द्र व पञ्चपरमेष्ठी महानुभावोंको निज भगवत्ताकी प्राप्तिके लिए मैं (आचार्य वसुनन्दी मुनि) नित्य नमस्कार करता हूँ।

अदीदयालस्स सव्व-तित्थेसा जिणधम्म-पवट्टगा य।
कल्लाणालया महाणुभावा पणमामि भत्तीइ॥2॥

अतीतकालके सभी तीर्थङ्कर, जिनधर्मप्रवर्तक और कल्याणके आलय स्वरूप सभी महानुभावोंको मैं भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

भावी अरिहा सिद्धा, सूरी पाढगा साहू सुपुज्जा।
महाणुभावा वंदे, भवतारग-तरणीव णिच्चं॥3॥

संसार-सागरसे तारनेके लिए नावके समान भावी अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व साधु पूज्य महानुभावोंकी मैं नित्य वन्दना करता हूँ।

बहुसंबोहणसद्दा, लोए जहाजोगं अवेक्खाए।
जह को भणेदि भव्वो, बंधुजणो सज्जणो भादू॥4॥

लोकमें अपेक्षापूर्वक यथायोग्य बहुतसे सम्बोधन शब्द हैं। जैसे कोई कहता है भव्य, कोई कहता है बंधुजन, कोई सज्जन और कोई भाई।

धम्मसिरोमणी सेट्ठ-हिदत्थी सिवत्थी महाणुभावो।
पाणणाहो य भयवो, महासयो धम्माहारो वि॥5॥

कोई धर्मशिरोमणि, कोई श्रेष्ठ, कोई हितार्थी कहता है, कोई मोक्षार्थी, कोई महानुभाव, कोई प्राणनाथ, कोई भगवान्, कोई महाशय और कोई धर्माधार भी कहता है।

सुह-संबोहणसद्दा, पउत्ता मुणीण आसण्णभवीहि।
इदरजणेहिं इदरा, किण्णु णेव पओजणं अत्थ॥6॥

आसन्नभव्योंके द्वारा गुणीजनोंके लिए शुभ सम्बोधन शब्दोंका प्रयोग किया जाता है, एवं इतरजनोंके द्वारा इतर अर्थात् अशुभ संबोधन शब्दोंका प्रयोग किया जाता है किन्तु यहाँ इनका कोई प्रयोजन नहीं है।

सुसंबोहणसद्दा वि, सुह-सुहासव पुण्णबंध-हेदू य।
असुहासव-णिवत्तीइ, असुहसंवरस्स णिज्जराइ॥7॥

अच्छे संबोधन शब्द शुभ, शुभास्रव और पुण्यबन्धका हेतु हैं। वे अशुभ आस्रवकी निवृत्तिका, अशुभके संवरका एवं निर्जराका कारण हैं।

सहसद्देहि किरियाहि, अण्णजणाण सुद्धमणोभावेहि।
सुणिम्मला परिणामा, सज्जणाणं जहाजोग्गं दु॥8॥

शुभ शब्दोंसे, शुभ क्रियाओंसे व अन्य जनोंके लिए शुद्ध- मनोभावों से सज्जनोंके परिणाम यथायोग्य निर्मल होते हैं।

संबोहण-सद्दो सय, वत्ता- वत्तित्तं उज्जोदेदि हु।
सुहसंबोहणं विणा, मउडरहिदरायोव्व वत्ता॥9॥

सम्बोधन शब्द सदैव वक्ताके व्यक्तित्वको प्रकाशित करता है। शुभ सम्बोधनके बिना वक्ता मुकुटरहित राजाके समान जानना चाहिए।

सुहसंबोहण-हीणो, महिं विणा किसीव्व बीयं तरु व्व।
वा भोयणसामग्गिं, विणा सुभोयण-णिम्माणं व्व॥10॥

शुभसम्बोधनसे हीन वक्ता वैसेही है जैसे भूमिके बिना कृषि, बीजके बिना वृक्ष अथवा भोजनसामग्रीके बिना भोजननिर्माण। अर्थात् वह सम्यक् सुवक्ता नहीं, कुवक्ता है।

सुहसंबोहणं विणा, धम्मी ण रयणं रयणभूसणं व।
धम्मोवएसं णेव, खमो करिदुं पुण्णकज्जं ण॥11॥

शुभ संबोधनके बिना धर्मी वैसेही सम्भव नहीं है जैसे रत्नके बिना रत्नाभूषण। शुभ सम्बोधनके बिना व्यक्ति धर्मोपदेश या पुण्यकार्य करनेमें समर्थ नहीं है।

जदि संबोहण-सद्दो, उक्किट्ठो विशुद्धभावजणगो य।
सुहसंतिकारगो तो, उवएसो वि पहाणो वरो॥12॥

यदि सम्बोधन शब्द उत्कृष्ट, विशुद्धभावका जनक व सुख-शांतिका कारक होगा तभी वह उपदेश भी प्रधान व उत्तम हो सकता है।

सद्दाणचिंतसत्ती, साहणाराहणा-उवासणाणं।
हेदू तं विणा को वि, ण खमो सगप्पहिदं करिदुं॥13॥

शब्दोंकी शक्ति अचिन्त्य है। ये शब्द साधना, आराधना व उपासनाके हेतु हैं। उसके बिना कोईभी स्वात्महित करनेमें समर्थ नहीं है।

कस्स अवि उवएसस्स, पुव्वे सुमरंति सज्जणा इट्ठं।
मंगलायरणं सेट्ठ-सद्देहि देसंति सोदाण॥14॥

किसी भी उपदेशके पूर्व सज्जन इष्टका स्मरण करते हैं, मङ्गलाचरण करते हैं पुनः श्रेष्ठ शब्दों से श्रोताओं के लिए उपदेश देते हैं।

वदंति णेव सिविणे वि, धम्मणिंदगं अवमाणजणगं च।
सद्दं सज्जणो किण्णु, कुक्कणे खम्मंति सुद्धीइ॥15॥

सज्जन पुरुष स्वप्नमें भी धर्मनिन्दक और अपमानजनक शब्द नहीं बोलते किन्तु चूक होनेपर वे भावों की शुद्धिपूर्वक क्षमा माँगते हैं।

उवएसग-वत्तित्तं, पयडंते सया उवएस-सद्दा।
तं भादू णिवेदेमि, कुणह उत्तमवयणपओगं॥16॥

उपदेशके शब्द सदैव उपदेशकके व्यक्तित्वको प्रकट करते हैं इसलिए हे भाई! मैं निवेदन करता हूँ कि आप उत्तम वचनोंका प्रयोग करें।

महाणुभाव-सद्दस्स, कहिदुं खमो को पुण्णसामच्छं।
अस्स कहण-सुणणादो, जणिदाणंद-अणुभवगम्मो॥17॥

महानुभाव शब्दके पूर्ण सामर्थ्यको कहनेमें कौन समर्थ है। इसके कहने व सुननेसे उत्पन्न आनन्द अनुभवगम्य ही है।

महाणुभावो सद्दो, कत्थ पउत्तो काणं जीवाणं।
सग-भाव-विसुद्धीए, अस्सिं गंथम्मि परूवेमि॥18॥

इस महानुभाव शब्दका प्रयोग किन जीवोंके लिए, कहाँ होता है, उसका अपने भावोंकी विशुद्धिपूर्वक मैं इस ग्रन्थ में प्ररूपण करता हूँ।

जस्स मणे पडिक्खणे, उत्तमखमादी दसधम्मा सो हु।
पुरिसो महाणुभावो, भावी सिद्धो लोयपुज्जो॥19॥

जिसके मनमें प्रतिक्षण उत्तम-क्षमादि दस धर्म होते हैं वह पुरुष लोकपूज्य भावी सिद्ध महानुभाव है।

पहुभत्तीइ पसमिदा,कोहादी सव्वकसाया दु जस्स।
सो खलु महाणुभावो, सिरीजिणसासण-सुथंभोव्व॥20॥

प्रभुभक्तिसे जिसकी क्रोधादि सभी कषाय प्रशमित होती हैं; श्री जिनशासनके स्तम्भके समान वह महानुभाव होता है।

जो रयणत्तयजुत्तो, विवज्जिदो विसयकसायपावादु।
सो महाणुभावो तं, भाविसिद्धं णमंसामि हं॥21॥

जो विषय-कषाय व पापसे रहित हैं एवं रत्नत्रयसे युक्त हैं वह महानुभाव हैं। उन भावी सिद्धको मैं नमस्कार करता हूँ।

जस्स ण मदो मच्छरो, मायारूवकुडिलभावा कया वि।
सो महाणुभावो जं, भावा महाणरूवा तस्स ॥22॥

जिसके अहङ्कार, मात्सर्य एवं मायारूप कुटिलभाव कदापि नहीं है वह महानुभाव है क्योंकि उसके भाव महान् रूप होते हैं।

सवर-असुहस्स हंता, सुहकत्ता सत्तीए सुभावेहि।
जे ते महाणुभावा, लोयम्मि सय पसंसणीया॥23॥

जो स्व-पर अशुभके हन्ता हैं, शुभ भावोंसे शक्तिपूर्वक शुभकर्ता हैं वे महानुभाव हैं एवं लोकमें सदा प्रशंसनीय हैं।

सुद्धभावजुत्ता सद्दिट्ठी अणुव्वदी महव्वदी वा।
भावी जिणिंदा महाणुभावा सया वंदणीया॥24॥

जो शुद्धभावसे युक्त सम्यग्दृष्टि, अणुव्रती वा महाव्रती भावी जिनेन्द्र हैं वे महानुभाव सदैव वन्दनीय हैं।

जाण उक्किट्ठ-भावा, जिणभत्तीए णिग्गंथविणयस्स।
णियमा महाणुभावा, ते भावी मुत्तिसिरिकंता॥25॥

जिनके जिनभक्ति व निर्ग्रन्थ-गुरुओंकी विनयके उत्कृष्ट भाव हैं वे महानुभाव नियमसे भावी मुक्तिश्रीके कान्त हैं।

लहिय बहुविहवं णिहिं, णो मदेण उम्मत्ता कया वि जे।
ते सुहभावसंजुदा, संसणीया महाणुभावा॥26॥

जो बहुत वैभव व निधिको प्राप्तकर कभी मदसे उन्मत्त नहीं होते वे शुभभावोंसे युक्त महानुभाव सदैव प्रशंसनीय हैं।

मिच्छत्ताइ-वज्जिदा, सम्मत्ताइ-सुहभाव-परिणदा य।
जे ते महाणुभावा, भावी जिणा वंदणीया दु॥27॥

जो मिथ्यात्वादिसे विवर्जित एवं सम्यक्त्वादि शुभभावोंसे परिणत हैं वे भावी जिनेन्द्र महानुभाव हैं एवं सदा वन्दनीय हैं।

मदहासादी णुत्तो, भावा वोच्छिण्णा रायादीदो।
जस्स हु महाणुभावो, मद्दवाइ-गुणोवेदो सो॥28॥

जिसके मद, हास्य आदि नहीं कहे गए हैं एवं भाव रागादिसे रहित हैं और जो मार्दवादि गुणोंसे युक्त हैं, वह महानुभाव हैं।

णाणपयासो चित्ते, जस्स अहंकाराइ-विवज्जिदो य।
सो भावि-सिद्धो महाणुभावो भणिदो जिणसमये॥29॥

जिसके चित्तमें अहङ्कार आदिसे रहित ज्ञानका प्रकाश है वह भावी सिद्ध जिनशासनमें महानुभाव कहा गया है।

मूलाहारेण तरू, जह लोयो वादवलयाहारेण।
भव्वत्तादी सुगुणा, तह जस्स महाणुभावो सो॥30॥

जैसे जड़के आधार वृक्ष है, वातवलयके आधारसे लोक है उसी प्रकार जिसके भव्यत्वादि सुगुण हैं वह महानुभाव है।

सव्वण्हु-धम्मसहाइ, धम्मोवएसं सुणंति जे के वि।
ते चिय महाणुभावा, णेव कयावि इदरा णेया॥31॥

जो कोई भी जीव सर्वज्ञप्रभुकी धर्मसभामें उपदेश सुनते हैं वे निश्चयसे महानुभाव जानने चाहिए। इसके विपरीत महानुभाव नहीं हैं।

मेत्तं एगखणस्स वि, रुई जिणधम्मे णिग्गंथेसुं च।
जिणगी-जिणदेवेसुं, जस्स चिय महाणुभावो सो॥32॥

जिसकी जिनधर्म, निर्ग्रन्थ गुरु, जिनवाणी व जिनेन्द्रदेवों में एकक्षणमात्रकी भी रुचि हो जाती है वह महानुभाव है।

महाणुभावत्तादो, देंति जिणा उवएसं भव्वाणं।
अभव्वाणं कयावि ण, जम्हा ते अंधपहाणोव्व॥33॥

भव्यजीवोंमें महानुभावत्व होनेसे जिनेन्द्रदेव भव्यजीवोंको ही उपदेश देते हैं किन्तु अभव्योंको कदापि नहीं देते क्योंकि वे अन्ध पाषाणके समान हैं।

महाणुभावा समये, आसण्णभव्वा णिगोदजीवा वि।
अभव्वो सुरो वि णेव, गहणीयो तेण सद्देणं॥34॥

आसन्नभव्य निगोदिया जीव भी जिनशासनमें महानुभाव जानने चाहिए। किन्तु अभव्यदेव भी उस महानुभाव शब्दसे ग्राह्य नहीं हैं।

सव्वट्ठसिद्धिवासी, इग-बे-आइ-अप्पभवधारगा य।
सव्वा महाणुभावा, लोयंतिग सची सक्कादी॥35॥

एक-दो आदि अल्पभवके धारक, सर्वार्थसिद्धिके वासी अहमिन्द्र, लौकान्तिक देव, शची-इन्द्राणी, सौधर्म-इन्द्रादि सभी महानुभाव हैं।

सव्वसिद्धियर-सिद्धा, सयलगुणधारगा महाणुभावा।
णमामि अप्पसिद्धीइ, कंता सया मुत्तिरमाए॥36॥

सर्वसिद्धिके कारक, सकलगुणके धारक, मुक्ति रूपी स्त्रीके कान्त सभी सिद्ध महानुभावोंको आत्मसिद्धिके लिए मैं नमस्कार करता हूँ।

कम्मविहीणा सुद्धा, चेयणाए सुद्धगुण-संजुत्ता।
णियला विमला अयला, महाणुभावा पणमामि हं।।37।।

कर्मोंसे विहीन शुद्ध चेतनाके गुणोंसे युक्त, निकल, विमल व अचल सभी महानुभावोंको मैं नमस्कार करता हूँ।

णमामि जिणिंदवाणिं, सव्वसंदेहविणासगं णिच्चं।
महाणुभावा भव्वा, गहंते तं सवरहिदत्थं।।38।।

सर्वसन्देहको नाश करने वाली श्री जिनेन्द्रप्रभुकी वाणीको मैं नित्य नमस्कार करता हूँ। भव्य महानुभाव उस जिनेन्द्रवाणीको स्वपर-हितके लिए ग्रहण करते हैं।

सिद्धणंतणुवमाणं, आइ-मज्झ-अंत-विरहिदाणं तह।
अंतादीद-गुणाणं, णमो सय महाणुभावाणं।।39।।

आदि, मध्य व अन्तसे रहित, अनन्तगुणोंसे युक्त, अनुपम, अनन्त सिद्ध महानुभावोंको सदा नमस्कार हो।

सयलगुणपुंजाणं च, दव्वभावणोकम्म-विरहिदाणं।
अच्चुदपदाणं णमो, महाणुभावाण सिद्धाणं।।40।।

सकलगुणोंके पुञ्ज, द्रव्य-भाव-नोकर्मसे रहित, अच्युत पद वाले सर्व सिद्ध महानुभावोंको नमस्कार हो।

अप्पुप्पण्णसुहाणं, दव्वगुणभावसंजुत्ताणं तह।
सासयसुद्धप्पाणं, णमो सय महाणुभावाणं।।41।।

आत्मोत्पन्न सुखसे युक्त तथा द्रव्य, गुण व भावसे संयुक्त शाश्वत शुद्धात्मा महानुभावोंको सदा नमस्कार हो।

घादिकम्मविवज्जिदा, अणंतचउक्कजुदा य अरिहंता।
उहयसिरी-सुभूसिदा, महाणुभावा परियंदामि।।42।।

घातियाकर्मोंसे रहित, अनन्त चतुष्टयसे युक्त, दोनों प्रकारकी लक्ष्मी अर्थात् अन्तरङ्ग बहिरङ्ग लक्ष्मीसे विभूषित अरिहन्त महानुभावोंको नमस्कार करता हूँ।

सव्वण्हुं गदरायं, अट्ठारस-दोसवज्जिदं धीरं।
महाणुभावं वंदे, अप्पगुणलद्धीइ भत्तीइ।।43।।

अट्ठारह दोषोंसे रहित, धीर, सर्वज्ञ, वीतराग महानुभावको आत्मगुणोंकी प्राप्तिके लिए भक्तिपूर्वक वन्दना करता हूँ।

उसहाइवीर-जिणाण, धम्मपवट्टग-महाणुभावाणं।
विगदरायदोसाणं, णमो सया जोगत्तयेणं।।44।।

राग व द्वेषसे रहित श्रीऋषभादि महावीर जिनधर्म-प्रवर्तक महानुभावोंको योगत्रयसे सदा नमस्कार हो।

धम्मपवट्टग-मुसहं, जुगसेट्ठं जेट्ठं च सव्वदंसिं।
अहिपं महाणुभावं, धम्मकम्मदेसगं थुवेमि।।45।।

युगश्रेष्ठ, युगज्येष्ठ, सर्वदर्शी, अधिप, धर्म व कर्मके उपदेशक, धर्मप्रवर्तक श्री ऋषभनाथ महानुभावकी मैं स्तुति करता हूँ।

कम्मविजेदुं अजिदं, सुपुत्तं तह जिदसत्तुविजयाणं।
अक्खयविहवसंजुदं, परियंदामि महाणुभावं।।46।।

राजा जितशत्रु व रानी विजयाके सुपुत्र, कर्म विजेता, अक्षय वैभवसे संयुक्त श्रीअजितनाथ महानुभावको मैं नमस्कार करता हूँ।

भवणासगं संभवं, जिणं अप्पम्मि पाविदुं सिवत्तं।
महाणुभावं वंदे, सव्वकज्जसिद्धिकारगं दु।।47।।

सर्वकार्योंकी सिद्धि करनेवाले, संसारके नाशक श्री सम्भवनाथ महानुभावकी अपनी आत्मा में शिवत्वकी प्राप्तिके लिए मैं वन्दना करता हूँ।

पणमामि अहिणंदणं, महाणुभावं च अप्पगुणणिलयं।
अंतादीद-णिहिजुदं, अप्पगुणणंदं पावेदुं।।48।।

जो आत्मगुणोंके निधान हैं, अन्तातीत निधिसे युक्त हैं उन श्रीअभिनन्दन महानुभावको आत्मगुणोंके आनन्दकी प्राप्तिके लिए मैं नमस्कार करता हूँ।

सुमदिदायगं सुमदिं, धम्मोवदेसगं महाणुभावं।
केवलसुमदिं लहिदुं, बोहिं पणमामि तिजोगेहि।।49।।

सुमतिदायक, धर्मोपदेशक श्रीसुमतिनाथ महानुभावको केवलज्ञान व बोधिकी प्राप्तिके लिए मैं तीनों योगोंसे नमस्कार करता हूँ।

पउमवण्णिं पउमजिणवर-मुहयसिरीजुत्तं णमंसामि।
सिवपउमं लहिदुं हं, महाणुभावं मुत्तिकंतं।।50।।

जो दोनों प्रकारकी (अन्तरङ्ग व बहिरङ्ग) लक्ष्मीसे युक्त हैं, मुक्तिरूपी स्त्रीके कान्त हैं, उन पद्मवर्णी श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र महानुभावको मोक्षलक्ष्मीकी प्राप्तिके लिए मैं नमस्कार करता हूँ।

भवपासं विच्छेदुं, सुपासणाहजिणं महाणुभावं।
सत्थिगचिण्ह-संजुदं, सुरासुरेहि वंदं वंदे॥51॥

जो स्वास्तिक चिह्नसे युक्त हैं, सुर-असुरोंके द्वारा वंद्य हैं उन श्रीसुपार्श्वनाथ जिन महानुभावकी वन्दना मैं भवपाशके विच्छेदके लिए करता हूँ।

चंदप्पहं जिणिंदं, चंदंकजुदं महासेणपुत्तं।
गुणणिहि-महाणुभावं, वंदे वसुविहिं णासेदुं॥52॥

चंद्र चिह्नसे युक्त, राजा महासेनके पुत्र, गुणनिधि श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्र महानुभावकी वसुकर्मोंको नाश करनेके लिए मैं वन्दना करता हूँ।

थुवमि मोक्खविहिकत्तुं, सिरीसुविहिणाहं महाणुभावं।
भवदुक्खभंजगं तित्थेसं पुप्फदंतं णिच्चं॥53॥

संसार दु:खके नाशकरने वाले, मोक्षविधिके कर्त्ता तीर्थेश श्रीसुविधिनाथ वा श्रीपुष्पदंत महानुभावकी मैं नित्य स्तुति करता हूँ।

कप्पतरुचिण्हजुत्तं, स-वराण सीयलं महाणुभावं।
पाविदुं सीयलत्तं, सीयलणाहं सया थुवेमि॥54॥

कल्पवृक्ष चिह्नसे युक्त, स्व-परके लिए शीतल श्री शीतलनाथ महानुभावकी शीतलता पानेके लिए मैं सदा स्तुति करता हूँ।

सुहकज्जेसुं आगद-सव्वविग्घाइं अंतरायादो।
खयिदुं सक्कं महाणुभावं सेयंसं पणमामि॥55॥

जो अन्तराय कर्मसे शुभ कार्योंमें आनेवाले सभी विघ्नोंको क्षय करनेमें समर्थ हैं उन श्रीश्रेयांसनाथ महानुभावको मैं नमस्कार करता हूँ।

पढमबालजदिं अरुण-देहिं वसुपुज्ज-सुपुत्तं वंदे।
सव्वरोय-विणासगं, तित्थेसं महाणुभावं च॥56॥

राजा वसुपूज्यके पुत्र, लालवर्णी देहसे युक्त, सर्वरोगोंका नाश करने वाले प्रथम बालयति तीर्थंकर (श्री वासुपूज्य) महानुभावकी मैं वन्दना करता हूँ।

विमलं महाणुभावं, विमलभावस्स य विमलसरूवस्स।
परमविमलणाणजुदं, वंदेमि विमलपदट्ठिदीइ॥57॥

परम विमलज्ञानसे युक्त श्रीविमलनाथ महानुभावकी वन्दना विमलभाव, विमलस्वरूप व विमल पदमें स्थितिके लिए करता हूँ।

अंतादीद-गुणं सय, सिरि अणंतणाहं महाणुभावं।
सव्वकंदप्परहिदं, अणंतगुणपत्तीइ वंदे॥58॥

जो सर्व कन्दर्प भावसे रहित हैं अन्तातीत गुणोंसे युक्त हैं, उन श्रीअनन्तनाथ महानुभावकी अनन्तगुणोंकी प्राप्तिके लिए मैं वन्दना करता हूँ।

जीवदयातच्चसच्च-उत्तमखमाइ-धम्मुवदेसगं च।
धम्मणाहं संथुवमि, महाणुभावं गुणं लहिदुं॥59॥

जीवदया, तत्त्व, सत्य, उत्तम क्षमादि धर्मके उपदेशक श्रीधर्मनाथ महानुभावकी स्तुति मैं गुणोंकी प्राप्तिके लिए करता हूँ।

विस्ससंतिकारगं च, कसाय-सामग-उवदेसगं सया हि।
संतिजिणं तित्थेसं, महाणुभावं सय अंचेमि॥60॥

विश्वशांतिके कारक, कषायके शमनका उपदेश देने वाले तीर्थेश श्रीशान्तिनाथ महानुभावकी मैं सदा अर्चना करता हूँ।

कुंथु-आइ-जीवाणं, रक्खगं चक्किं काम-तित्थेसं।
णमामि महाणुभावं, कुंथुणाहं तिजोगेहि हं॥61॥

कुन्थु आदि जीवोंके रक्षक, चक्रवर्ती, कामदेव व तीर्थङ्कर श्रीकुन्थुनाथ महानुभावको मैं तीनों योगोंसे नमस्कार करता हूँ।

अरजिणं धम्मपवरं, गुणगंभीरं तह महाणुभावं।
मच्छचिण्हसंजुत्तं, तिविहपदसहिदं णमंसामि॥62॥

जो गुणोंमें गम्भीर हैं, मछली चिह्नसे संयुक्त हैं, तीन प्रकारके (चक्रवर्ती, कामदेव व तीर्थंकर) पदसे सहित हैं उन धर्मप्रवर श्रीअरनाथ-जिन महानुभावको मैं नमस्कार करता हूँ।

मोहमल्लविजेदुं च, महाणुभावं तहा हाडगवण्णिं।
घडंकजुदं बालजदि-मल्लिणाहं सय णमंसामि॥63॥

स्वर्णवर्णी, कलश चिह्नसे युक्त, मोहरूपी मल्लके विजेता, बालयति श्रीमल्लिनाथ महानुभावको मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

कच्छवचिण्हजुदं सुर-असुरसुपूजिदं मुणिसुव्वदं हं।
सासयसुव्वदधारग-महाणुभावं परियंदामि॥64॥

जिनका चिह्न कछुआ है, जो सुर व असुरोंके द्वारा पूजित हैं, जो शाश्वत सुव्रतोंके धारक हैं उन श्रीमुनिसुव्रतनाथ महानुभावको मैं नमस्कार करता हूँ।

णमिदं सुरासुरेहिं, णमिणाहं केवलणाणदिणेसं।
णीलपउमंकजुत्तं, महाणुभावं सया थुवेमि॥65॥

जो नीलपद्म चिह्नसे युक्त हैं, केवलज्ञान रूपी सूर्य हैं, सुरासुरोंके द्वारा नमित श्रीनमिनाथ महानुभावकी मैं सदा स्तुति करता हूँ।

जदुवंस-तिलगभूदं, णेमिजिणं किण्हवण्णि-भादुजुदं।
कम्मुम्मूलगं महाणुभावं णमामि तिजोगेहि॥66॥

जो यदुवंशके तिलक थे, श्यामवर्ण वाले कृष्ण जिनके भाई थे, ऐसे कर्मोंका उन्मूलन करने वाले श्रीनेमिनाथ जिन महानुभावको मैं तीनों योगोंसे नमस्कार करता हूँ।

पत्तकेवलणाणं च, कमठकिद-घोरुवसग्गं जयित्ता।
समेण अहिचिण्हजुदं, सम्मेदादो गदं मोक्खं॥67॥

केकीकंठसरीरिं,सेविदं धरणिंद-पउमावदीहि।
वंदे महाणुभावं, देवहिदेवं पासणाहं॥68॥

कमठ द्वारा किए गए घोर उपसर्गको समत्वभावसे जीतकर जिन्होंने केवलज्ञानको प्राप्त किया, जो सर्प चिह्नसे युक्त हैं, जिन्होंने सम्मेदशिखरसे मोक्ष प्राप्त किया, जिनके शरीरका

वर्ण मयूर कण्ठके समान था, जो धरणेन्द्र व पद्मावतीसे सेवित हैं उन महानुभाव देवाधिदेव श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी मैं वन्दना करता हूँ।

कम्मकक्खदाहगं च, महावीराइ-पणणामधारगं।
महाणुभावं देवं, पुज्जेमि जिणत्तं लहेदुं॥69॥

कर्मरूपी वनको जलाने वाले, श्रीमहावीर आदि पाँच नामके धारक जिनदेव महानुभावकी जिनत्वकी प्राप्तिके लिए मैं पूजा करता हूँ।

सीमंधर-पहुदि-अजिद-वीरियंत-विज्जमाण-तित्थयरा।
विदेहखेत्ते वंदे, खेमंकरा महाणुभावा॥70॥

विदेहक्षेत्रमें विद्यमान, कल्याणकारी श्रीसीमंधरसे लेकर श्रीअजितवीर्य पर्यन्त तीर्थङ्करों महानुभावोंकी मैं नित्य वन्दना करता हूँ।

भावी तित्थयरा तह, धम्मपवट्टगा महाणुभावा य।
अट्ठकम्मं णासिदुं, अट्ठंग-णमणं कुणेमि हं॥71॥

भावी तीर्थङ्कर, धर्मप्रवर्तक महानुभावोंको अष्टकर्मके नाशके लिए मैं अष्टाङ्ग नमस्कार करता हूँ।

अस्स देसस्स णामो, भारदं होज्ज सय भरदादो तं।
उसहणाह-सुत्त-पढम-चक्किं महाणुभावं थुवमि॥72॥

जिन भरत चक्रवर्तीके नामसे इस देशका नाम भारत पड़ा उन श्रीवृषभनाथके पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत महानुभावकी मैं स्तुति करता हूँ।

उसहतित्थयर-पुत्तं, सुणंदाए भरद-भादुं कामं।
महाणुभावं वंदे, सिरी-बाहुबलिं जगपुज्जं॥73॥

श्रीवृषभनाथ तीर्थङ्कर व महारानी सुनन्दाके पुत्र, भरत चक्रवर्तीके भाई, कामदेव, जगत्पूज्य श्रीबाहुबलि महानुभावकी मैं वन्दना करता हूँ।

अंत-भद्दबाहु-सहिद-सव्व-सुदकेवली महाणुभावा।
वीरजिणस्स सासणे, बोहिं लहिदुं परियंदामि॥74॥

वीरजिनके शासनमें अंतिम श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी सहित सभी श्रुतकेवली महानुभावोंको बोधिकी प्राप्तिके लिए मैं नमस्कार करता हूँ।

जदी मुणी अणगारा, दियंबरा समणा-णिग्गंथ-रिसी।
तियाले तिलोयपुज्ज-महाणुभावा परियंदामि॥75॥

यति, मुनि, अनगार, दिगम्बर श्रमण, निर्ग्रन्थ व ऋषि, तीनों कालोंमें त्रैलोकपूज्य इन महानुभावोंको मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

ऊणसट्ठि-समहिद-चउदससया उसहसेणाइ-गणेसा।
इड्ढिजुदा णमंसामि, महाणुभावा विसुद्धीए॥76॥

ऋद्धि युक्त चौदह सौ उनसठ (1459) श्री वृषभसेनादि गणधर देव महानुभावों को मैं विशुद्धिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

वादी पडिवादी वेगुव्वियइड्ढिधारगा गुणणिलया।
लोयपालगा णमामि, जगपुज्जा महाणुभावा य॥77॥

गुणोंके निलय, लोकपालक, जगद्पूज्य, विक्रिया ऋद्धिके धारी एवं वादी-प्रतिवादी मुनिराज महानुभावोंको मैं नमस्कार करता हूँ।

मणोण्णा सिक्खा कुला, तवस्सी साहू गिलाणा सूरी।
पाढग-महाणुभावा, धम्मधुरंधरा णमंसामि॥78॥

मनोज्ञ, शैक्ष्य, कुल, तपस्वी, साधु, ग्लान, आचार्य व पाठक धर्मधुरन्धर महानुभावोंको मैं नमस्कार करता हूँ।

पुलाग-बकुस-कुसीलाण्हादगा-णिग्गंथा य केवलिणो।
भव्वेहि वंदणीया, सव्वमहाणुभावा वंदे॥79॥

भव्योंके द्वारा वन्दनीय पुलाक, बकुश, कुशील, स्नातक व निर्ग्रन्थ मुनि एवं केवलीजिन इन सभी महानुभावोंकी मैं वन्दना करता हूँ।

सच्चंधर-विजयाणं, सुद-जीवंधरं मसाणे जादं।
महाणुभावं सुपुण्णवंतं णमामि भवं खयिदुं॥80॥

राजा सत्यन्धर व रानी विजयाके पुत्र जीवन्धर श्मशानमें उत्पन्न हुए। उन सुपुण्यवान् महानुभावको मैं संसार क्षय लिए नमस्कार करता हूँ।

अंतणुबद्धकेवलिं, कदतवं वउलखेडाइ पणमामि।
महुराए मोक्खगदं, जंबुसामिं महाणुभावं॥81॥

अन्तिम अनुबद्धकेवली जिन्होंने (श्रीजम्बूस्वामी तपोस्थली) वोलखेड़ामें तप किया एवं मथुरासे मोक्षको प्राप्त किया उन श्रीजम्बूस्वामी महानुभावको मैं नमस्कार करता हूँ।

पुव्वभवे उसहदास-सेट्ठि-गेहम्मि सुहगो गोवालो।
वंदे महामंतेण, सुदंसणं महाणुभावं दु।।82।।

जो पूर्वभवमें वृषभदास श्रेष्ठीके घरमें सुभग नामक ग्वाला हुआ। महामन्त्रसे जो सुदर्शन हुआ उन सुदर्शन महानुभावकी मैं वन्दना करता हूँ।

तुसमासं घोसंतो, भावविसुद्धीए लहीअ मोक्खं।
सिवभूदि-महाणुभाव-महं वंदे मोक्खपत्तीइ।।83।।

जिन मुनि शिवभूति महानुभावने तुष-मास (दाल अलग-छिलका अलग) कहते हुए भावविशुद्धिपूर्वक मोक्ष प्राप्त किया उन शिवभूति महानुभावकी मैं मोक्षप्राप्तिके लिए वन्दना करता हूँ।

सिरीपउमं वसुबलं, दसरहसुदं मज्जादाणरवरं।
वंदे महाणुभावं, भरदभादुं, लद्धमोक्खं च।।84।।

राजा दशरथके पुत्र, भरतके भाई, आठवें बलभद्र, मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम जिन्होंने मोक्ष प्राप्त किया उन महानुभावकी मैं वन्दना करता हूँ।

देवेहिं परिक्खिदो, मेहरहो महाणुभावो दयाइ।
होही य संतिणाहो, तिपदधारगं पणमामि तं।।85।।

देवोंके द्वारा परीक्षित राजा मेघरथ महानुभाव दयाके कारण श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर हुए। तीन पदके धारी उन श्रीशान्तिनाथ भगवानको मैं नमस्कार करता हूँ।

किण्हो णवमो हरी य, ओसहिदाणेण होज्ज तित्थयरो।
महाणुभावो हवेज्ज, पणकल्लाणणिहि-धारगो दु॥86॥

नवम नारायण श्रीकृष्ण महानुभाव औषधिदानसे पञ्च-कल्याणक-निधिके धारक तीर्थङ्कर होंगे।

भारद-रायो सेणिग-सुद-अजादसत्तू महाणुभावो।
जिणसासणपहावगो, मण्णो तह णिग्गंथभत्तो॥87॥

राजा श्रेणिक का पुत्र, जिनशासन प्रभावक, निर्ग्रन्थगुरुओंका भक्त, भारतका राजा अजातशत्रु महानुभाव माननीय है।

पउमेण जिणपूयाइ, धणदत्त-गोवाल-महाणुभावो।
होज्ज राय-करकंडू, तं भावि-सिद्धं णमंसामि॥88॥

कमलसे जिनपूजा करनेसे महानुभाव धनदत्त ग्वाला राजा करकण्डु हुआ। उन भावी सिद्धको मैं नमस्कार करता हूँ।

चंद-बिंदु-असोगाण, गुरु-चाणक्क-महाणाणी अंते।
मुणी अणल-उवसग्गं, सहिय देवो महाणुभावो॥89॥

राजा चन्द्रगुप्तमौर्य, राजा बिन्दुसार व राजा अशोकके गुरु महाज्ञानी महानुभाव चाणक्यमुनि अन्तमें अग्निका उपसर्ग सहनकर देव हुए।

दिक्खिदो णंदिमित्तो, विणयगुत्त-मुणिणा चिय अग्गभवे।
चंदगुत्त-मोरियो दु, पुणो महाणुभावो समणो॥90॥

विनयगुप्त मुनिराजसे दीक्षित श्रीनन्दिमित्र मुनिराज आगे भवमें राजा चन्द्रगुप्तमौर्य हुए और पुनः वे महानुभाव श्रमण हुए।

वीरजिणसमवसरणे, पुच्छिदा पण्हा सट्ठिसहस्सा दु।
सेणिगेण भावि-तित्थ-महापउम-महाणुभावेण॥91॥

श्रीवीरजिनेन्द्रके समवसरणमें राजा श्रेणिक ने 60,000 प्रश्न पूछे। वे श्रेणिक भविष्यमें तीर्थङ्कर महापद्म महानुभाव हुए।

जेणं सत्तसयगुहा, णिम्माविदा खंडुदय-गिरीसु सो।
महाणुभावो संसो, खारवेलो कलिंगचक्की॥92॥

जिन्होंने खण्डगिरी-उदयगिरीमें 700 गुफाओंका निर्माण कराया, वे कलिङ्ग चक्रवर्ती महानुभाव सम्राट खारवेल प्रशंसनीय हैं।

लहीअ कुजोणिं राय-दंडगो मुणीसु उवसग्गं कडुअ।
जडाउ-महाणुभावो, मुणिदाणणुमण्णगो भद्दो॥93॥

राजा दण्डकने मुनियोंपर उपसर्ग करके कुयोनिको प्राप्त किया। पुनः आगे चलकर वह मुनिके आहारदानकी अनुमोदना करने वाला भद्र पक्षी जटायु महानुभाव हुआ।

किदंदवक्को दु राम-सेणावदी दियंबर-मुणी होज्ज।
सुपुज्ज-महाणुभावो, रामसंबोहगो सुरो पुण॥94॥

श्रीरामके सेनापति कृतान्तवक्र दिगम्बर मुनिराज हुए। पूज्य वे महानुभाव पुनः देव हुए जिन्होंने रामको सम्बोधन दिया।

सेट्ठी णायदत्तो दु, छलेण दुद्दरो जादि-सिमरणेण।
समवसरणं गमंतो, महाणुभावो सुरो होही॥95॥

श्रेष्ठी नागदत्त छलसे मेंढक हुआ। पुनः जातिस्मरणसे समवसरणमें जाता हुआ वह महानुभाव देव हुआ।

मुणिरक्खाइ समप्पिद-सूगरो सीहेणं भिडिय विविणे।
महाणुभावो सग्गे, देवो पस्स धम्म-पहावं॥96॥

मुनिराजकी रक्षाके लिए समर्पित शूकर जङ्गलमें सिंहसे भिड़कर (मृत्युको प्राप्तकर) वह महानुभाव स्वर्गमें देव हुआ। अहो! धर्मका प्रभाव देखो।

पाविदो मोक्खो सगरचक्कि-जिणभत्त-महाणुभावेणं।
विरत्तो होच्चा देव-मणिकेदु-संबोहणेणं दु॥97॥

देव मणिकेतुके संबोधनसे विरक्त होकर जिनभक्त महानुभाव चक्रवर्ती सगरने मोक्ष प्राप्त किया।

धणदेवो पालित्ता, सच्चाणुव्वदं महाणुभावो दु।
होज्ज सुरपुज्जो सच्च-वद-महिमं जाणिय धरेज्जा॥98॥

सत्याणुव्रतका पालन कर धनदेव महानुभाव देवोंके द्वारा पूज्य हुआ। अतः सत्यव्रतकी महिमाको जानकर उसे धारण करो।

णिण्णामगो णिग्गंथ-सेवाइ दयाए महाणुभावो।
होज्ज णवमहरि-किण्हो, करेज्ज साहुसेवं तम्हा॥99॥

निर्ग्रन्थ गुरुकी सेवा व करुणासे निर्नामक महानुभाव नौवें नारायण श्रीकृष्ण हुए। अतः साधुओंकी सेवा करनी चाहिए।

वेज्जावच्चं किच्चा, महाणुभाव-णंदिसेणो होज्जा।
णिग्गंथाण वसुदेव-पुण्णवंतो णेमि-भादू य॥100॥

निर्ग्रन्थ मुनिराजोंकी वैयावृत्ति करके नन्दिषेण महानुभाव तीर्थङ्कर नेमिनाथके भाई पुण्यवान् वसुदेव हुए।

रुप्पखुर-सुदो सुवण्ण-खुरो महाणुभावो महामंतं।
जविय होज्ज सुरो सेट्ठि-उसहदास-संबोहणेणं॥101॥

श्रेष्ठी वृषभदासके सम्बोधनसे रूप्यखुर चोरका पुत्र सुवर्णखुर चोर महानुभाव महामन्त्रका जाप कर देव हुआ।

यमपालो मादंगो, चउदहमीइ अहिंसं पालित्ता।
पस्सह वद-माहप्पं, भो सुरपुज्जमहाणुभावो॥102॥

चतुर्दशीके दिन अहिंसाव्रतका पालनकर महानुभाव यमपाल चाण्डाल देवोंके द्वारा पूज्य हुआ। अहो! व्रतका माहात्म्य तो देखो।

उवगूहणे पसिद्धो, सद्दिट्ठि-जिणदत्त-महाणुभावो।
धम्मरक्खगो सुरपुज्जो होज्ज सिवो थोगयाले॥103॥

उपगूहन अङ्गमें प्रसिद्ध, धर्मका रक्षक, सम्यग्दृष्टि जिनदत्त महानुभाव देवोंके द्वारा पूज्य हुए एवं अल्पसमय में सिद्ध होंगे।

ठिदिकरणम्मि पसिद्धो, मुणी वारिसेणो महाणुभावो।
चेलणा-पुत्तो धम्म-पहावगो पावीअ मोक्खं॥104॥

महारानी चेलनाके पुत्र, स्थितिकरण अङ्गमें प्रसिद्ध, धर्म प्रभावक, महानुभाव वारिषेण मुनिराजने मोक्ष प्राप्त किया।

समत्तेण वग्घीए, किदुवसग्गं सहिय सुकोसलेणं।
महाणुभावेण खयिय, सव्वकम्मं लहिदो मोक्खो॥105॥

व्याघ्रीके द्वारा किए गए उपसर्गको समता भावसे सहनकर महानुभाव सुकौशल मुनिराजने सर्व कर्मों का क्षयकर मोक्ष प्राप्त किया।

मुणिणिंदाइ सहंतो, दुहं वाउभूदी पुण सुकुमालो।
महाणुभावो सहित्तु, उवसग्गं होज्ज अहमिंदो॥106॥

मुनिनिन्दासे दु:खोंको सहते हुए वायुभूति सुकुमाल हुए पुन: मुनिराज सुकुमाल महानुभाव उपसर्ग सहनकर अहमिन्द्र हुए।

मरणासण्णो साणो, सुणिय महामंतं जीवंधरेण।
अंते महाणुभावो, भद्दो होज्ज देवो सग्गे॥107॥

जीवन्धरकुमारसे अन्तमें णमोकारमन्त्र सुनकर भद्र मरणासन्न श्वान महानुभाव स्वर्गमें देव हुआ।

बहुदुक्खं सोढित्ता, चारुदत्तो वेस्सागमण-रदो य।
पच्छा महाणुभावो, मुणिवरो होही अहमिंदो॥108॥

वेश्यागमनमें रत चारुदत्त बहुत दु:खोंको सहकर पश्चात् श्रीमुनिवर महानुभाव होकर अहमिन्द्र हुए।

णिव्विदुगंछा-अंगं, पालिय उद्दायण-महाणुभावो।
सुप्पसिद्धो उत्तमं, गदिं लहीअ गुणाणुरायी॥109॥

निर्विजुगुप्सा अङ्गका पालन कर महानुभाव राजा उद्दायन सुप्रसिद्ध हुए। उन गुणानुरागीने उत्तम गतिको प्राप्त किया।

संतिवम्मा दु खत्तिय-सुदो समंतभद्द-महाणुभावो।
णिग्गंथसाहू होच्च, जिणसासण-महापहावगो॥110॥

क्षत्रिय पुत्र शान्तिवर्मा निर्ग्रन्थ साधु श्रीसमन्तभद्र महानुभाव होकर जिनशासनके महाप्रभावक हुए।

विज्जुदचोरो दु महाणुभावो जंबूसामि-संगदीइ।
होज्ज णिग्गंथसाहू, कम्मं खयिय लहीअ मोक्खं॥111॥

श्री जम्बूस्वामीकी सङ्गतिसे विद्युत्चोर महानुभाव निर्ग्रन्थ साधु हुए एवं कर्म क्षयकर मोक्षको प्राप्त किया।

वाणर-णउला सीहो, सूगरो पत्तदाणणुमोदणेण।
महाणुभावा होच्चा, उसह-पुत्ता होज्जा सिद्धा॥112॥

पात्रदानकी अनुमोदनासे वानर, नकुल, सिंह व शूकर श्रीवृषभदेव महानुभावके पुत्र होकर सिद्ध हुए।

अंजणचोरणामेण, पसिद्धो ललिदंग-महाणुभावो।
महासड्ढाभावेण, अट्ठापदादु लहीअ सिवं॥113॥

महाश्रद्धाके भावसे अञ्जनचोर नामसे प्रसिद्ध ललिताङ्ग महानुभावने अष्टापदसे मोक्ष प्राप्त किया।

अकंपणाइ-सत्तसय-मुणिणो रक्खिय मुणि-विण्हुकुमारो।
लहीअ परमसिवपदं, महाणुभावो सुझाणेणं॥114॥

श्री अकम्पनाचार्यादि 700 मुनिराजोंकी रक्षा कर श्रीविष्णुकुमार महानुभावने सद्ध्यानसे परम मोक्षपदको प्राप्त किया।

रायसिरीकंठो मुणि-णिंदाए कुट्ठी य सिरीवालो।
पुण सो महाणुभावो, कम्मं खयिय लहीअ मोक्खं॥115॥

मुनिनिन्दा करनेसे राजा श्रीकण्ठ कुष्ठी श्रीपाल हुए। पुनः उन महानुभावने कर्म क्षयकर मोक्ष प्राप्त किया।

मुणिदाणेण णरसुहं, लहीअ सिरीसेण-महाणुभावो।
तित्थयर-संतिणाहो, चक्की कामो य जगपुज्जो॥116॥

मुनिराजको आहारदान देनेसे राजा श्रीषेण महानुभावने नरसुख प्राप्त किया, अनन्तर वे जगत्पूज्य चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थङ्कर श्रीशान्तिनाथ जिन हुए।

परित्थीइ असेवगो, भावि-तित्थयरो धादगिखंडस्स।
पडिहरि-महाणुभावो, णियोगेण घादिदो हरिणा॥117॥

परस्त्रीका सेवन नहीं करने वाले धातकीखण्डके भावी तीर्थंकर प्रतिनारायण रावण महानुभाव नियोगसे नारायण लक्ष्मण द्वारा नाशको प्राप्त हुए।

अणेग-संघस्सं जिणभत्तो वरंगो सहिय मुणी होज्ज।
पच्छा लहीअ मोक्खं, महाणुभावो सव्वपुज्जो॥118॥

जिनभक्त राजकुमार वराङ्ग अनेक सङ्घर्षोंको सहनकर मुनि हुए पश्चात् उन सर्वपूज्य महानुभावने मोक्ष प्राप्त किया।

धण्णंकर-पुण्णंगर-दासा जिणच्चाइ महाणुभावा।
अमरसेण-वइरसेण-कुमारा होज्ज देवपुज्जा॥119॥

जिनेन्द्रप्रभुकी अर्चनासे दास धण्णङ्कर व पुण्णङ्कर महानुभाव अमरसेन व वइरसेन कुमार होकर देवोंके द्वारा पूज्य हुए।

चरियचक्किं जुगपुरिस-महाणुभावं परमपहावगं च।
जिणसासणुण्णदियरं, संतिसायर-सूरिं णमामि॥120॥

जिनशासनोन्नतिकरा, परमप्रभावक, युगपुरुष, चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महानुभावको सदा नमस्कार करता हूँ।

ववहारकुसलं सूरि-पायसिंधुं विसुद्ध-चरियवंतं।
महाणुभावं हु महातवसिं लोयप्पियं वंदे॥121॥

विशुद्ध चर्यावान्, व्यवहारकुशल, लोकप्रिय, महातपस्वी महानुभाव आचार्य श्रीपायसागर जी मुनिराजकी मैं वन्दना करता हूँ।

दुद्धरतवसिं इंदिय-जेदुं बालजदिं महाणुभावं।
आइरियं जयकित्तिं, सुजसधारगं परियंदामि॥122॥

दुर्द्धरतपस्वी, इंद्रियजेता, बालयति, सुयशधारक महानुभाव आचार्यश्री जयकीर्ति जी मुनिराजको नमस्कार करता हूँ।

देसस्स परमभूसण-महाणुसासगं रट्ठहिदेसिं च।
महाणुभावं सूरिं, देसभूसणं सय पणमामि॥123॥

देशके परम भूषण, महानुशासक, राष्ट्रहितैषी महानुभाव आचार्यश्री देशभूषण जी मुनिराजको सदा नमस्कार करता हूँ।

विस्सधम्मपेरग-सिद्धंतचक्किं च सिदपिच्छाइरियं।
विज्जाणंदं वंदे, महाणुभावं रट्ठसंतं॥124॥

विश्वधर्म-सम्प्रेरक सिद्धान्तचक्रवर्ती, राष्ट्रसन्त, श्वेतपिच्छाचार्य महानुभाव श्रीविद्यानन्द जी मुनिराजकी मैं वन्दना करता हूँ।

रइदो महाणुभावो, वसुणंदि-सूरिणा मइ गुरुकिवाइ।
जावदु ससिदिवायरो, तावदु जिणसासणं जयेदु॥125॥

यह 'महानुभाव' नामक ग्रन्थ मुझ आचार्य वसुनन्दीके द्वारा गुरु कृपासे रचा गया। जब तक चन्द्र-सूरज हैं तब तक यह जिनशासन जयवन्त रहे।

रायट्ठाणे झंझीरामपुरदिसयखेत्ते अलवरस्स।
पणवीससयएगपण्णासे वीरद्धम्मि पुण्णो॥126॥

राजस्थान प्रान्तमें अलवर जिलेके झाञ्झीरामपुरा अतिशय क्षेत्रमें पच्चीस सौ इक्यावन वीर निर्वाण संवत्में यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

(प्राकृत साहित्य)			
क्र.सं.	नाम	क्र.सं.	नाम
1.	प्राकृत वाणी भाग-1	2.	प्राकृत वाणी भाग-2
3.	प्राकृत वाणी भाग-3	4.	प्राकृत वाणी भाग-4
5.	अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)	6.	अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
7.	अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)	8.	जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
9.	जदि-किदि-कम्मं(यति कृतिकर्म)	10.	णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
11.	णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)	12.	तच्चसारो (तत्त्व सार)
13.	धम्म सुत्तं (धर्म सूत्र)	14.	अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
15.	सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)	16.	अप्पणिब्भर-भारदं (आत्मनिर्भर भारत)
17.	विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्यावसु श्रावकाचार)	18.	रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
19.	अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)	20.	णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
21.	मूल-वण्णो (मूल वर्ण)	22.	मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
23.	विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)	24.	विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
25.	समवसरण सोहा (समवसरण शोभा)	26.	वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
27.	अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)	28.	कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
29.	को विवेगी (विवेकी कौन)	30.	पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
31.	तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)	32.	रयणकंडो (सूक्ति कोश)
33.	धम्मस्स सुत्ति संगहो	34.	कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
35.	खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)	36.	सिरि सीयलणाह-चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
37.	अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)	38.	समणायारो (श्रमणाचार)
39.	असोग-रोहिणी-चरियं (अशोक रोहिणी चरित्र) (महाकाव्य)	40.	लोगुत्तरविट्टी (लोकोत्तर वृत्ति)
41.	समणभावो (श्रमण भाव)	42.	झाणसारो (ध्यानसार)
43.	इड्ढिसारो (ऋद्धिसार)	44.	जिणवयणसारो (जिनवचनसार)
45.	भत्तिगुच्छो (भक्ति गुच्छ)	46.	पसमभावो (प्रशम भाव)
47.	सम्मेदसिहर महप्पुरो (सम्मेदशिखर महात्म्य)	48.	अम्हाण आयवत्तो (हमारा आर्यावर्त्त)
49.	विणयसारो (विनय सार)	50.	तव-सारो (तप सार)
51.	भाव-सारो (भाव सार)	52.	दाण-सारो (दान सार)
53.	लेस्सा-सारो (लेश्या सार)	54.	वेरग्ग-सारो (वैराग्य सार)
55.	णाण-सारो (ज्ञान सार)	56.	णीदि-सारो (नीति सार)

57.	आयंस-सिक्खाविही (आदर्श शिक्षाविधि)	58.	दंसण-परिक्खा (दर्शन परीक्षा)
59.	महाणुभावो (महानुभाव)	60.	उववासो (उपवास)
61.	संजम-सारो (संयमसार)	62.	सम्मत्त-सारो (सम्यक्त्व सार)

टीका ग्रंथ			
1.	प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)	2.	वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3.	नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)	4.	श्रीनंदा टीका-सिद्धिप्रिय स्तोत्र (संस्कृत)

इंग्लिश साहित्य			
1.	Inspirational Tales Part& 1&2	2.	Meethe Pravachan Part-I

वाचना साहित्य			
1.	इष्टोपदेश (मुक्ति का वाग्दान)	2.	प्रश्नोत्तर रत्नमालिका (बोधि वृक्ष)
3.	सामायिक पाठ (शिवपथ का रथ)	4.	समाधि तंत्र (स्वात्मोपलब्धि)
5.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार (श्रावकधर्म-संहिता)	6.	ज्ञानांकुश (तत्त्व चिंतन के सूत्र)

प्रवचन साहित्य			
1.	आईना मेरे देश का	2.	उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3.	उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)	4.	उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दुःखदानी)
5.	उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)	6.	उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7.	उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)	8.	उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9.	उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)	10.	उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दुःख ही मानो)
11.	उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)	12.	खुशी के आँसू
13.	खोज क्यों रोज-रोज	14.	गुरुत्तं भाग 1
15.	गुरुत्तं भाग 2	16.	गुरुत्तं भाग 3
17.	गुरुत्तं भाग 4	18.	गुरुत्तं भाग 5
19.	गुरुत्तं भाग 6	20.	गुरुत्तं भाग 7
21.	गुरुत्तं भाग 8	22.	गुरुत्तं भाग 9
23.	गुरुत्तं भाग 10	24.	गुरुत्तं भाग 11
25.	गुरुत्तं भाग 12	26.	गुरुत्तं भाग 13
27.	गुरुत्तं भाग 14	28.	गुरुत्तं भाग 15
29.	गुरुत्तं भाग 16	30.	गुरुत्तं भाग 17
31.	गुरुत्तं भाग 18	32.	चूको मत
33.	जय बजरंगबली	34.	जीवन का सहारा
35.	ठहरो! ऐसे चलो	36.	तैयारी जीत की
37.	दशामृत	38.	धर्म की महिमा
39.	ना मिटना बुरा है न पिटना	40.	नारी का धवल पक्ष

41.	शायद यही सच है	42.	श्रुत निर्झरी
43.	सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा	44.	सीप का मोती (महावीर जयंती)
45.	स्वाती की बूँद		

हिंदी गद्य रचना

1.	अन्तर्यात्रा	2.	अच्छी बातें
3.	आज का निर्णय	4.	आ जाओ प्रकृति की गोद में
5.	आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान	6.	आहारदान
7.	एक हजार आठ	8.	कलम पट्टी बुद्धिका
9.	गागर में सागर	10.	गुरु कृपा
11.	गुरुवर तेरा साथ	12.	जिन सिद्धांत महोदधि
13.	डॉक्टरों से मुक्ति	14.	दान के अचिन्त्य प्रभाव
15.	धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)	16.	धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17.	निज अवलोकन	18.	वसु विचार
19.	वसुनन्दी उवाच	20.	मीठे प्रवचन (भाग 1)
21.	मीठे प्रवचन (भाग 2)	22.	मीठे प्रवचन (भाग 3)
23.	मीठे प्रवचन (भाग 4)	24.	मीठे प्रवचन (भाग 5)
25.	मीठे प्रवचन (भाग 6)	26.	रोहिणी व्रत कथा
27.	स्वप्न विचार	28.	सद्गुरु की सीख
29.	सफलता के सूत्र	30.	सर्वोदयी नैतिक धर्म
31.	संस्कारादित्य	32.	हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1.	अक्षरातीत	2.	कल्याणी
3.	चैन की जिंदगी	4.	ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5.	मुक्ति दूत के मुक्तक	6.	हाइकू
7.	हीरों का खजाना	8.	सुसंस्कार वाटिका

विधान रचना

1.	कल्याण मंदिर विधान	2.	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3.	चौसठऋद्धि विधान	4.	णमोकार महार्चना
5.	दुःखों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)	6.	यागमंडल विधान
7.	श्री समवशरण महार्चना	8.	श्री नंदीश्वर विधान
9.	श्री सम्मेदशिखर विधान	10.	श्री अजितनाथ विधान
11.	श्री संभवनाथ विधान	12.	श्री पद्मप्रभ विधान
13.	श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)	14.	श्री चंद्रप्रभ विधान
15.	श्री पुष्पदंत विधान	16.	श्री शांतिनाथ विधान

17.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	18.	श्री नेमिनाथ विधान
19.	श्री महावीर विधान	20.	श्री जम्बूस्वामी विधान
21.	श्री भक्तामर विधान	22.	श्री सर्वतोभद्र महार्चना
23.	श्री पंचमेरू विधान	24.	लघु नंदीश्वर विधान
25.	श्री चौबीसी महार्चना	26.	अभिनव सिद्धचक्र महार्चना
27.	अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना		

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य)

1.	आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)	2.	आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य)
3.	आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)	4.	कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5.	कर्मप्रकृति (सिद्धांतचक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)	6.	गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7.	चार श्रावकाचार संग्रह	8.	जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9.	जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)	10.	जिन सहस्रनाम स्तोत्र
11.	तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)	12.	तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13.	तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)	14.	तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15.	तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)	16.	तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17.	धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)	18.	धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19.	ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)	20.	नीतिसारसमुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदीस्वामी जी)
21.	पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)	22.	प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23.	पंचरत्न	24.	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्रस्वामी जी)
25.	मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)	26.	भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी स्वामी जी)
27.	भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)	28.	मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्तिस्वामी जी)
29.	योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबाल चंद्र जी)	30.	योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31.	रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)	32.	वसुऋद्धि
*	रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)	*	स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
*	पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)	*	इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
*	लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)	*	वैराग्यमणिमाला (आ. श्री विशालकीर्ति जी)
*	अर्हत् प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)	*	ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33.	सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगतिस्वामी जी)	34.	सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35.	समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)	36.	समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37.	सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)	38.	विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय)

प्रथमानुयोग साहित्य			
1.	अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)	2.	आराधना कथा कोश (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3.	करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)	4.	कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5.	गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)	6.	चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7.	चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)	8.	चेलना चरित्र
9.	चंद्रप्रभ चरित्र	10.	चौबीसी पुराण
11.	जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)	12.	त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13.	देशभूषण कुलभूषण चरित्र	14.	धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15.	धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	16.	नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17.	नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)	18.	प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19.	पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)	20.	पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21.	पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)	22.	पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23.	भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)	24.	भद्रबाहु चरित्र
25.	मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	26.	महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27.	महापुराण (भाग 1-2)	28.	महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29.	मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)	30.	यशोधर चरित्र
31.	रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)	32.	रोहिणी व्रत कथा
33.	व्रत कथा संग्रह	34.	वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35.	विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)	36.	वीर वर्धमान चरित्र
37.	श्रेणिक चरित्र	38.	श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39.	श्री जम्बूस्वामी चरित्र (श्री वीर कवि)	40.	शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41.	सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)	42.	सम्यक्त्व कौमुदी
43.	सती मनोरमा	44.	सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45.	सुरसुंदरी चरित्र	46.	सुलोचना चरित्र
47.	सुकुमाल चरित्र	48.	सुशीला उपन्यास
49.	सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बरैया)	50.	सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
51.	हनुमान चरित्र	52.	क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य
1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान • नवग्रह विधान • वास्तु निवारण विधान • मृत्युंजय विधान (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्रनाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक

4.	शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान • भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल) • शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी) • सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)		
5.	कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)	6.	तत्त्वोपदेश (छहढाला) (पं. प्रवर दौलतराम जी)
7.	दिव्य लक्ष्य (संकलन- हिंदी पाठ, स्तुति आदि)	8.	धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9.	प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	10.	भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11.	विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)	12.	सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13.	संसार का अंत	14.	स्वास्थ्य बोधामृत
15.	पिच्छि-कमण्डलु (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)		

गुरु पद विनयांजली साहित्य			
1.	आचार्य श्री विद्यानंद जी की यम सल्लेखना (मुनि प्रज्ञानंद)	2.	अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
3.	पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)	4.	वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
5.	दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्व नंदनी, वर्चस्व नंदनी)	6.	स्मृति पटल से भाग-1 (आ. श्री वर्धस्व नंदनी)
7.	स्मृति पटल से भाग-2 (आ. श्री वर्धस्व नंदनी)	8.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
9.	गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)	10.	परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
11.	स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)	12.	स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
13.	हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)	14.	वसु संबुध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद जी जैन)
15.	समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')		

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज कृत

जिणवाणी-थुदी

महुरं विसदं पिय-गंभीरं

हिदयरं मिदं सिरिजिणवाणिं।

अणेगंतमयं सिआवायमयं

णिरुवमं समं सिरिजिणवाणिं।

जिणसव्वंगादो णिस्सरिदं

भविचित्तहरं सिरिजिणवाणिं।

बारस-अंगेहिं संजुत्तं

लोएपुज्जं सिरिजिणवाणिं।

कंठादिवचोकारणरहिदं

तयरोयहरं सिरिजिणवाणिं।

जगमंगल्लं जगकल्लाणिं

पणमामि सया सिरिजिणवाणिं।

NOTES